शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्त्री चेतना के संदर्भ में 'औरत' उपन्यास

दीप्ति
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
वनस्थली विद्यापीठ
टोंक, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

आदिकाल से लेकर अब तक स्त्री विमर्श हिन्दी साहित्य का एक अविभाज्य अंग बना हुआ है। समाज के साथ ही साहित्य में भी एक नयी नारी चेतना का उदय हुआ है। भारत में स्त्री चेतना भिन्न परिवेश में चर्चा में आयी। उसका स्वरूप पश्चिम से बिलकुल अलग है। भारत की सांस्कृतिक विविधता के साथ ही यहाँ स्त्री चेतना के भी विविध रूप दिखाई देते हैं। शिवप्रसाद सिंह ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण जनजीवन का यथार्थ चित्रण किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके उपन्यास 'औरत' में स्त्री चेतना के सन्दर्भ में प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तावना

शिवप्रसाद सिंह हिन्दी के उन लेखकों में से एक हैं जिन्होंने समाज में स्त्रियों की स्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। शिवप्रसाद सिंह का जन्म 19 अगस्त सन् 1928 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद में जलालपुर (जमानियाँ) ग्राम के एक सम्भ्रान्त, मध्यवर्गीय कृषक परिवार में हुआ।'1 ग्रामीण परिवेश में पले-बढे होने के कारण ग्रामीण जीवन के प्रति इनका एक विशेष लगाव हो जाना स्वाभाविक ही है। इनकी पहली कहानी 'दादी माँ', उनके ग्रामीण जीवन के निजी अनुभवों पर आधरित है। ग्रामीण जीवन के साथ-साथ नारी जीवन के प्रति भी शिवप्रसाद सिंह के हृदय में एक मार्मिक स्थल है, जिसकी झलक इनकी कृतियों में देखने को मिलती है। शिवप्रसाद सिंह के अनुसार, "मैं नारी को अलग-अलग सत्ता मानकर नहीं समाज की क्रिया शक्ति मानकर उसके बारे में विचार करता हूँ। अति सामान्य नारी ही मेरे लेखन में चित्रित है। मैं उसमें वर्ग भेद नहीं करता, क्योंकि नारी में मुझे वर्गगत भेद कम नजर आए।"2 शिवप्रसाद सिंह ने तत्कालीन ग्रामीण परिवेश में नारी के संघर्ष को अपने लेखन का विषय बनाया। उन्होंने 'अलग- अलग वैतरणी', 'औरत' आदि उपन्यासों में नारी की विवशता तथा उसके अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्ष को दिखाया है।

हालांकि भूमण्डलीकरण के इस दौर मे अब सब कुछ तेजी से परिवर्तित हो रहा है ऐसे में नारी की स्थिति भी पहले जैसी नहीं रही है। अनेक सजग महिला कार्यकर्ताओं ने महिलाओं को जागरूक बनाने, उनके अधिकारों की रक्षा, लैंगिक आधार पर भेदभाव का विरोध आदि को अपना लक्ष्य बनाकर उल्लेखनीय कार्य किये हैं, लेकिन आज भी बहुत सी ऐसी जगह है जहाँ पर अभी भी स्त्री का शोषण हो रहा है। कभी उसकी वैश्या, कुल्टा आदि कहकर अवहेलना की जाती है, तो कभी देवी बनाकर पूजा की जाती है। उसे समाज में बराबरी का दर्जा नहीं दिया जाता। यही नारी के जीवन की विड़म्बना है। स्त्री स्वयं भी अपने हक के लिये लड़ते-लड़ते राह भटक जाती है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"कही उसमें साधारण दयनीयता है और कहीं असाधारण विद्रोह, सन्तुलन से उसका जीवन परिचित नहीं।"3

औरत उपन्यास में स्त्री चेतना

शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास 'औरत' में भी स्त्री के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। यह उपन्यास आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना तत्कालीन समय में था। वर्तमान में स्त्री अपने अधिकारों को लेकर जागरूक होना चाहती है और हो भी रही है, लेकिन सोबरन राय जैसे आदमखोर जानवर स्त्रियों को अपनी दरिन्दगी का शिकार बना लेते हैं। वे स्त्री मन को पूर्ण विकसित होने से पहले ही उसकी आत्मा पर ऐसा आघात करते हैं कि नारी का सम्पूर्ण जीवन नर्क बनकर रह जाता है। आज भी कोई न कोई शिवेन्द्र स्त्री के हक के लिए लड़ता नजर आता है। शिवप्रसाद सिंह ने अपने उपन्यास 'औरत' में 'सोनवा' को एक ऐसी स्त्री के रूप में दर्शाया है जो फैशनपरस्त औरत है और वह प्रेम में इस कदर डूबी है कि बलात्कार हो जाने के पश्चात् आने वाले अनचाहे गर्भ को अपने प्रेमी का गर्भ होने की कल्पना करके मन ही मन प्रसन्न होती है। वह अपने भाई से कहती है -"हाँ, हाँ मुझे सुख मिलता है। सपने का भी सुख होता है। मेरे पेट में जिसका गर्भ आना चाहिए था, वह नहीं आया, किन्तु दुनिया उसे उसी का गर्भ कहती है तो मैं खुश क्यों न होऊ ?"4 सोनवां न चाहते हुए भी प्रेम के वशीभूत पराधीन है। वह अपना सर्वस्व शिवेन्द्र को मानती है और जब वह अपने सपने से जागती है तो स्वयं को शिवेन्द्र के लायक न मानकर आत्महत्या कर लेती है। वह अपने साथ हुये कुकृत्य का बदला स्वयं नहीं लेना चाहती बल्कि वह तो अपने साथ हुई हर जाति का बदला शिवेन्द्र के प्रेम के आगे भुला देना चाहती है। ऐसा नहीं है कि वह अपने अधिकारों के प्रति शून्य है। वह मजदूरिनों को मर्दों के बराबर मजदूरी दिलाने के लिए सत्याग्रह भी करती है और सोबरन राय से टकराती है। लेकिन स्वयं के लिए वह कुछ नहीं करती। वहीं दूसरी ओर प्रतिभा बंसल जैसी पुलिस ऑफिसर भी है जो स्त्री के खिलाफ जुर्म करने वाले हर आदमी को समाप्त करने के लिये तत्पर है। वह किसी भी कीमत पर औरत के प्रति हो रहे अत्याचार को बर्दाश्त नहीं कर सकती। इन चरित्रों में स्त्री सामान्य नहीं है। एक ओर वह प्रेम के कारण बहुत अधिक कोमल हो चुकी है। अगर देखा जाए तो वह एक तरह से जीवन के संघर्षों का सामना न करके मौत रूपी पलायन कर लेती है। वहीं दूसरी ओर प्रतिभा बंसल इतनी अधिक कठोर हो चुकी है कि जब कभी भी उसे कोई गुनहगार मिलता है तो सभी को वह अपने साथ हुये अन्याय का दोषी मानकर हर पुरुष को उसकी सजा देती है।

शिवप्रसाद सिंह के ये दोनों स्त्री पात्र आज भी प्रासंगिक हैं। आज भी स्त्रियाँ या तो सोनवां बन जाती हैं या प्रतिभा बंसल। बहुत ही कम स्त्रियाँ हैं जो रूपवा और चन्द्रा जैसी सुलझी हुई बन पाती हैं और अपनी वास्तविक स्थिति को समझकर जीवन के साथ सामान्य तालमेल बिठा पाती हैं।

शिवप्रसाद सिंह ने 'औरत' उपन्यास में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक शिवेन्द्र के माध्यम से अनेक औरतों की जीवन गाथा लिखी है। यह उपन्यास समाज में खासकर दलित वर्ग की स्त्री के जीवन की विसंगतियों का जीवंत चित्र प्रस्तुत करता है। आज भी दलित और गरीबों की बहू-बेटियों के साथ छेड़छाड़ की जाती है और वे जब विरोध करतीं हैं, तो वह छेडछाड़ बलात्कार का घिनौना

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

रूप धारण कर लेती है। हमारे समाज का प्रतिष्ठित और पूंजीपति वर्ग अपनी सत्ता और धन की ताकत से उनकी आवाज का गला घोंट देता है। ऐसी स्त्रियाँ या तो आत्महत्या करती हैं या फिर यह समस्या वेश्यावृत्ति का रूप धारण कर लेती है क्योंकि समाज अपने ही द्वारा कुचली गई अस्मिता को अपनाने से इंकार कर देता है।

समाज के इस कुरूप चेहरे को उजागर करते हुए 'अनामिका' ने लिखा है -"भीतर कहीं किसी पनडुब्बी में कोई तालिबानी तो छुपकर नहीं बैठा ? कहते हैं, वो कहीं भी हो सकता है! राक्षस ने जैसे अपनी जान तोते में डाल रखी थी, उसने हमारे महबूबों, भाइयों, दोस्तों, बेटो, पिताओं तथा अन्य बुजुर्गों में भी छुपा रखी है। अपनी दरिन्दगी इत्ती-इत्ती ही सही, पर इत्ते अन्तरंग रिश्तों में इत्ती-सी भी दरिन्दगी अन्दर की हरीतिमा झुलसा देने को पर्याप्त है।"5 वर्तमान समाज इन बातों का जीवंत उदाहरण है।

औरत का वजूद पुरूष के बिना कुछ नहीं समझा जाता है। "वे शून्य के समान पुरूष की इकाई के साथ सब कुछ है, परन्तु उससे रहित कुछ नहीं।"6 स्त्री का जन्म के साथ ही संपूर्ण अस्तित्व पुरूष के साथ जुड़ जाता है। विवाह से पहले वह पिता के नाम से जानी पहचानी जाती है और विवाह उपरान्त उनका सम्पूर्ण जीवन पति पर निर्भर करता है। यदि किसी स्त्री का पति अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाता है तो समाज उसे अस्तित्व विहीन समझ लेता है। साथ ही उसके चरित्र पर अनेक आक्षेप लगाने लगता है। उपन्यास में कल्पनाथ के मरने के उपरानत उसकी पत्नि चन्द्रा के चरित्र को लेकर भी तमाम बातें उठती हैं लेकिन वह एक दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वासी स्त्री है जो इन आक्षेपों से स्वयं को टूटने नहीं देती। समाज में इतनी रूढ़ियाँ व्याप्त हैं कि किसी औरत के पति के मरने के बाद उस विधवा के जीवन से सारी खुशियों और रंगों को ही छीन लिया जाता है। उपन्यास की उपधाइन भौजी इसका जीता जागता प्रमाण हैं। उनके पति के मरने के बाद उनसे घर वार सब छीन लिया जाता है। एक बार वे अपने छोटे भाई के विवाह में बिन बुलाये शरीक होने के बाद चुपके से नई दुल्हन का मुँह देखने की चेष्टा करतीं हैं तो उनके पिता उनसे कहते हैं -"हट जा, विधवा की छाया नहीं पड़नी चाहिए ये नई गृहस्थी बनाने जा रहे है। तू जानकर इनका अशुभ क्यों सोच रही है, हट जा।"7 इतना कहकर उनके ऊपर छड़ी बरसा दी। यह समाज की विडम्बना ही है कि एक ऐसे इन्सान को अधिक प्रताड़ना दी जाती है, जिसका सर्वस्व पहले ही लुट चुका हो। अपने प्रिय मनुष्य के चले जाने के गम से स्त्री बाहर भी नहीं निकल पाती कि उसे अपने परिवार के लोग ही सहारा देने के बजाए बहिष्कृत कर देते हैं तथा उसे नारकीय जीवन भोगने पर विवश करते हैं और जब शिवेन्द्र जैसा कोई मनुष्य उनकी पीड़ा को कम करना चाहता है तो वे अपनी गन्दी सोच को उसके चरित्र पर थोपने लगते हैं।

इस उपन्यास में सभी नारी पात्रों के साथ कुछ न कुछ घटित हुआ है, जिसके कारण उनके जीवन में परिवर्तन आ गया। सोनवां ने आत्महत्या का रास्ता अपनाया और प्रतिभा बंसल के आत्मसम्मान को ठेस पहुँची जिसके कारण उन्होंने पुरूष समाज से प्रतिकार लेने की ठानी और रूपवा कामरेड हरीश के साथ मिलकर समाज में सत्य के लिये लड़ते हुए शहीद हो गई। सिर्फ एक ही स्त्री पात्र चन्द्रा है जो संतुलित जीवन निर्वाह कर रही है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

महादेवी वर्मा ने कहा है, "भारतीय नारी भी जिस दिन अपने सम्पूर्ण प्राणवेग से जाग सके उस दिन उसकी गति रोकना सम्भव नहीं।"8 यह बात बिल्कुल सत्य है जब तक नारी खामोश रहती है उस पर हर कोई जुल्म करता रहता है परन्तु जब वह जाग जाती है तो प्रतिभा बंसल का रूप धारण कर लेती है जिसकी गति को रोक पाना किसी के वश में नहीं होता।

निष्कर्ष

उपन्यास के कथानक में औरतों की स्थिति को चित्रित किया गया है और दिखाया गया है कि किस प्रकार समाज का सम्पन्न वर्ग गरीब दलित नारियों की इज्जत-आबरू से खेलता है तथा स्वयं चरित्रहीन होने के बावजूद स्त्री के चरित्र पर आक्षेप लगाता है। साथ ही उपन्यास में औरतों की स्थिति को भी दर्शाया गया है कि किस प्रकार एक स्त्री विभिन्न परिस्थितियों में भी चन्द्रा की तरह डटकर खड़ी रहती है और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 शीतांशु, पाण्डेय शशिभूषण - शिवप्रसाद सिंह सृटा और सृष्टि वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ 11

2 शीतांशु ,पाण्डेय शशिभूषण - शिवप्रसाद सिंह सृटा और सृष्टि ,वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ 22

3 वर्मा, महादेवी - श्रृंखला की कड़ियाँ लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2008, पृष्ठ 9

4 सिह, शिवप्रसाद, औरत, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 2002, पृष्ठ 26

5 अनामिका, स्त्री विमर्श का लोकपक्ष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ 7

6 वर्मा, महादेवी, श्रृंखला की कड़ियाँ लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2008, पृष्ठ 94

7 सिह, शिवप्रसाद, औरत, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 2002, पृष्ठ 185

8 वर्मा, महादेवी - श्रृंखला की कड़ियाँ लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2008, पृष्ठ 9